भगवान बुद्ध
का
उपदेश

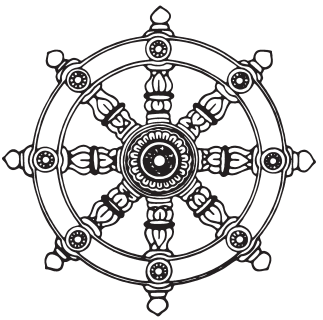

धर्म चक्र

भगवान बुद्ध के उपदेश एक निरन्तर चलती गाड़ी के चक्र (पहिए) की तरह दूर-दूर और अनंत काल तक चलायमान हैं। चक्र के आठा हिस्से बौद्ध धर्म के अष्ट मार्ग के प्रतीक हैं, जो कि धर्म का सबसे महत्वपूर्ण मार्ग है। सम्यक दृष्टि, सम्यक विचार, सम्यक वाणी, सम्यक कर्म, सम्यक जीविका, सम्यक परिश्रम, सम्यक धारणा और सम्यक ध्यान यही अष्ट मार्ग हैं। प्राचीन काल में जब बुद्ध मूर्ति बनाने का चलन नहीं था, धर्मचक्र ही पूजा जाता था। आजकल, धर्मचक्र बौद्ध धर्म का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित प्रतीक है।

Copyright © 1985, 2013 by **BUKKYO DENDO KYOKAI**

Any part of this book may be quoted without permission. We only ask that **Bukkyo Dendo Kyokai**, Tokyo, be credited and that a copy of the publication sent to us. Thank you.

BUKKYO DENDO KYOKAI
(Society for the Promotion of Buddhism)
3-14, Shiba 4-chome,
Minato-ku, Tokyo, Japan, 108-0014
Phone: (03) 3455-5851
Fax: (03) 3798-2758
E-mail: bdk@bdk.or.jp http://www.bdk.or.jp

Tenth Printing, 2018

Printed by
Kosaido Co., Ltd.
Tokyo, Japan

भगवान् बुद्ध प्रज्ञा महासागर के समान विशाल, तथा उनका हृदय महाकरुणा से ओतप्रोत है। बुद्ध का कोई रूप नहीं है, फिर भी उन्होंने अद्‌भुत रूप धारण कर हमें, प्रत्यक्षं सद्धर्भ का उपदेश किया।

यह ग्रंथ देश और जातीयता की सीमाओं को लाँघकर पाँच हज़ार से भी अधिक ग्रंथों में 2600 वर्ष में से भी अधिक समय तक सुरक्षित रखे गए भगवान बुद्ध के उपदेशों का सार है।

इसमें बुद्ध के वचनों को संक्षेप में ग्रथित किया गया है जो मानवी के सभी पहलुओं को और समस्याओं को स्पर्श, कर, उनका समाधान प्रस्तुत करते हैं।

धम्मपद

❖ इस संसार में वैर से वैर कभी शान्त नहीं होते। वह मैत्री से ही शान्त होते हैं—यह सदा का नियम है। (5)

❖ जो मूर्ख अपनी मूर्खता को समझता है वह इस कारण ज्ञानी है। जो मूर्ख अपने को ज्ञानी माने, वह यथार्थ में मूर्ख कहलाता है। (63)

❖ संग्राम में हजारों का हज़ारों बार जीतने से उत्तम विजय उसकी है जो अपने ऊपर विजय प्राप्त करता है। (103)

❖ उत्तम धर्म के दर्शन न करने वाले सौ वर्ष के जीवन से श्रेष्ठ हैं धर्म को देखने वाले का एक दिन का जीवन है। (115)

❖ मनुष्य का जीवन पाना कठिन है, मनुष्य का जीवित रहना कठिन है, सद्धर्म का श्रवण करना कठिन है और बुद्धों का उत्पन्न होना कठिन है। (182)

❖ सभी पापों को न करना, पुण्यों का संचय करना, अपने चित्त को शुद्ध करना यह बुद्धों की शिक्षा है। (183)

❖ न पुत्र रक्षा कर सकते हैं, न पिता, न बन्धु, मृत्यु के समय काई बन्धुजन रक्षक नहीं हो सकते। (288)

विषय-सूची

बुद्ध

प्रथम अध्याय ऐतिहासिक बुद्ध 2
1. महान जीवन 2
2. अंतिम उपदेश 10
द्वितीय अध्याय अनाद्यनन्त बुद्ध 15
1. उनकी करुणा तथा प्रणिधान 15
2. मोक्ष और उनके साधन 19
3. अनाद्यनन्त बुद्ध 22
तृतीय अधय बुद्ध का रूप और उनके सद्‌गुण 25
1. बुद्ध के त्रिकाय 25
2. बुद्ध के दर्शन 29
3. बुद्ध के सद्‌गुण 32

धर्म

प्रथम अध्याय हेतु-प्रत्यय 38
1. चार आर्यसत्य 38
2. अद्‌भुत कर्मसंबंध 41
3. प्रतीत्य-समुत्पाद 42
द्वितीय अध्याय मनुष्य का मन एवं वस्तुओं का यथाथ रूप 46
1. अनित्यता एवं अनात्मकता 46
2. मन की रचना 49
3. वस्तुओं का यथार्थ रूप..... 52
4. मध्यम-मार्ग..... 57

तृतीय अध्याय बुद्धत्व 65
1. पवित्र मन 65
2. बुद्धत्व 71
3. बुद्धता एवं अनात्मता 75
चतुर्थ अध्याय क्लेश 81
1. चित्त की अशुद्धियाँ 81
2. मनुश्य का स्वभाव 88
3. मानवी जीवन 90
4. भ्रान्ति का स्वरूप 95
पंचम अध्याय बुद्ध की दी हुई मुक्ति 102
1. अमिताभ बुद्ध के प्रणिधान (संकल्प) 102
2. अमिताभ बुद्ध की पवित्र भूमि-सुखवती 110

साधना का मार्ग

प्रथम अध्याय विशुद्धि का मार्ग 116
1. चित्त-शुद्धि 116
2. सदाचार का 123
3. भगवान बुद्ध के दृष्टान्त 134
द्वितीय अध्याय प्रत्यक्ष आचरण का मार्ग 150
1. सत्य का अन्वेषण 150
2. आरण के विविध मार्ग 163
3. श्रद्धा का मार्ग 176
4. बुद्ध के सुवचन 184

संघ

प्रथम अध्याय संघ के कर्तव्य 194
1. भिक्षुओं का जीवन 194
2. उपासकों का मार्ग 200
3. जीवन का मार्गदर्शन पथ 212
द्वितीय अध्याय बुद्धक्षेत्र का निर्माण 226
1. आपस का मेलजोल 226
2. बुद्ध का क्षेत्र 234
3. बुद्ध के क्षेत्र के आधार-स्तम्भ 239

'भगवान बुद्ध का उपदेश' संबंधित मूल सूत्रग्रंथ 245

परिशिष्ट

1. बौद्ध धर्म का संक्षिप्त इतिहास 256
2. बौद्ध सूत्रों के प्रयास का इतिहास 266
3. 'भगवान बुद्ध का उपदेश' का इतिहास 269
4. 'भगवान बुद्ध का उपदेश' की विषयानुक्रमणिका ... 274
5. संस्कृत शब्दवली 283

बौद्ध धर्म प्रवर्तन तथा 'भगवान बुद्ध का उपदेश' .. 292